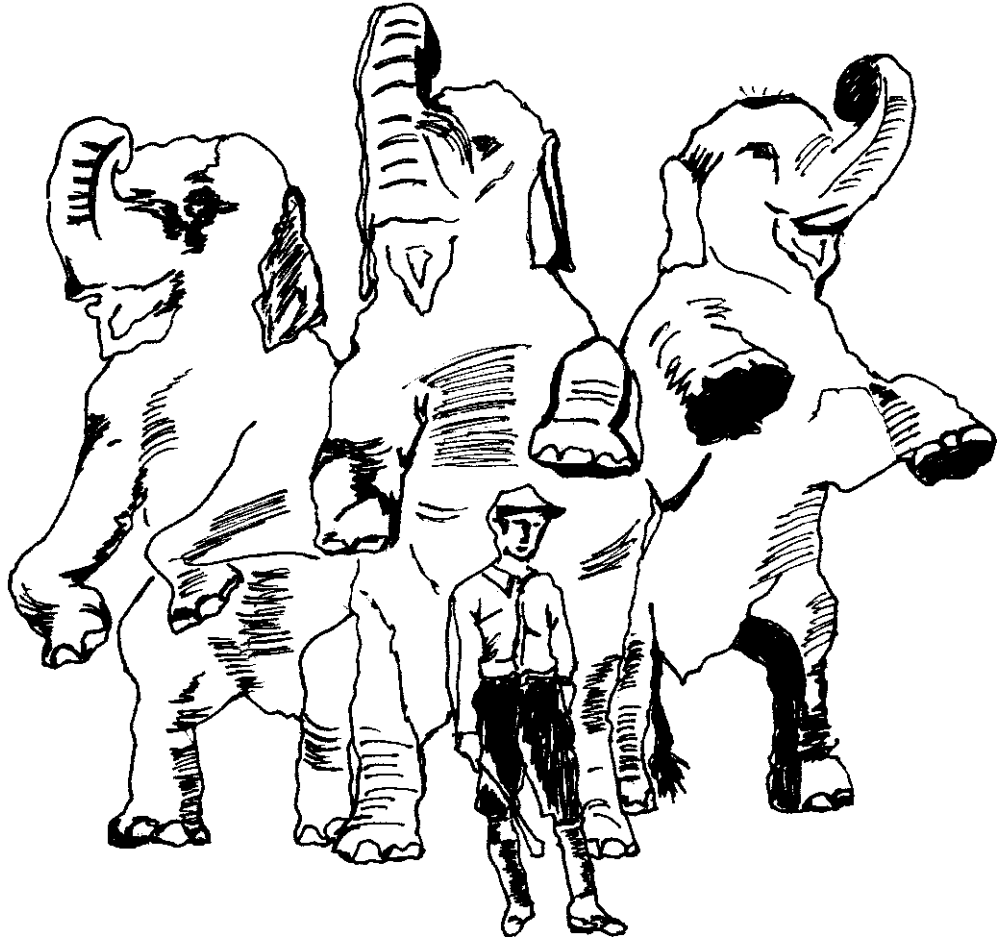


FAITHFUL ELEPHANTS

(A true story of Animals, People and War)

Yukio Tsuchiya



वफादार हाथी

(जानवरों, लोगों और युद्ध की सच्ची कहानी)

युकियो त्शुचिया

अनुवाद: अरविन्द गुप्ता

FOR THE READERS

Building a world without wars has been the greatest human ideal throughout history. Unfortunately, it has never been accomplished.

Politicians, diplomats, and military men possess the keys to achieving peace. The responsibility should not, however, be left entirely to them when the threat of nuclear war is as great as it is today.

I believe it is absolutely necessary for each human being to work toward the prevention of war and establishment of peace. The power of the individual is small, yet we believe in the strength of the collective human energy, just as we know a drop of water is the source of a great river.

For the past 22 years, one of the things I have done is to read on television and radio, and to include in my lectures, the story of the **Faithful Elephants**, written thirty seven years ago by Yukio Tsuchiya.

During the last stage of World War II, Tokyo was often attacked from the air. At the city zoo, the keepers, with tears in their eyes, had to kill many of the animals for fear that they would run amuck in the town if the zoo was bombed directly. **Faithful Elephants** describes how three elephants died at the Ueno Zoo in Tokyo at that time.

My act of reading this story seems trivial. However, twenty two years of tenacious and continuing sowing of the seeds of peace and the prevention of war are now bearing fruit. Strongholds of peace have been built in the hearts of adults and children when they realize the sorrow, misery, horror, and foolishness of war.

The biggest gift adults can give children is to make public the complete history of and the different viewpoints about war, and to help them consider how we can realize the human ideal.

I hope this book will be read throughout the world and that the seeds of peace and war prevention will be sown. I hope that those seeds will soon bud, bloom and bear fine fruit.

Chieko Akiyama (Radio and Television commentator and critic, Tokyo, 1988)

(Written in 1951 this book is in the 70th edition in Japan.)

पाठकों के लिए

एक ऐसी दुनिया रचना जिसमें लड़ाई, मारकाट और युद्ध न हों, हमेशा से इंसानियत का सबसे सुंदर सपना रही है। दुख इस बात का है कि इसे साकार करना अभी तक संभव नहीं हो पाया है।

राजनैतिक नेताओं, कूतनीतिज्ञों और सैनिक जनरलों के हाथ में शांति की कुंजी भले ही हो। परंतु इस महान जिम्मेदारी को केवल इन लोगों पर छोड़ देना गलत होगा। खासकर आज की स्थिति में, जब कि परमाणु युद्ध के आसार बहुत बढ़ गए हैं।

मेरा मानना है - यह बेहद जरूरी है कि दुनिया का हरेक इंसान युद्ध को रोकने और शांति की बहाली के लिए प्रयास करे। एक अकेले इंसान की ताकत सीमित होती है। परंतु बहुत से लोगों की सामूहिक शक्ति बहुत ताकतवर होती है। हमें पता है कि अथाह समुद्र भी, छोटी-छोटी बूंदों को मिलकर ही बनता है।

पिछले बाईस सालों में मैंने अपने तमाम रेडियो और टेलीवीजन कार्यक्रमों और भाषणों में 'वफादार हाथी' नाम की इस कहानी को सुनाया है। इसे सत्ताइस साल पहले सन् १९५१ में युक्रियो थुचिया ने लिखा था।

दूसरे महायुद्ध के अंतिम दौर में टोक्यो पर अक्सर बम बरसाए जाते थे। शहर के चिड़ियाघर के रखवालों को युद्ध के कारण तमाम जानवरों को मार डालना पड़ा। उन्हें इस बात का डर था कि अगर कोई बम चिड़ियाघर पर आ गिरा तो जंगली जानवर शहर में घुस जाएंगे और वहां आतंक मच जाएगा। 'वफादार हाथी' में उन तीन हाथियों का मार्मिक वर्णन है जिन्हें उस दौरान टोक्यो के यूनो चिड़ियाघर में मार डाला गया।

मेरा इस कहानी को सुनाना शायद आपको एक मामूली सी बात लगे। परंतु बाइस साल तक लगातार, बिना हारे-थके, युद्ध को नकारने और शांति के बीज बोने का फायदा अब मुझे साफ नजर आ रहा है। इससे कितने ही बच्चों और लोगों के दिलो-दिमागों में शांति की लौ जगी है और वे अब युद्ध की तबाही, बेवकूफी और फिजूलखर्ची को घृणा की दृष्टि से देखने लगे हैं।

शिक्षक और माता-पिता अपने बच्चों का युद्ध के विनाशकारी पक्षों से परिचय करा सकते हैं और उनसे एक शांतिपूर्ण दुनिया गढ़ने के बारे में चर्चा कर सकते हैं। यह एक ऐसी सुंदर सौगात है जो सभी वयस्क दुनिया के बच्चों को दे सकते हैं।

मुझे पूरी उम्मीद है कि यह पुस्तक दुनिया के सभी देशों में पढ़ी जाएगी और इसके द्वारा लोगों के मन में जंग के खिलाफ नफरत जगेगी और उनके दिलों में अमन और चैन के बीज पनपेंगे। मुझे पूरी आशा है कि एक दिन ये शांति के बीज फूलेंगे और सारी दुनिया में अपनी महक फैलाएंगे।

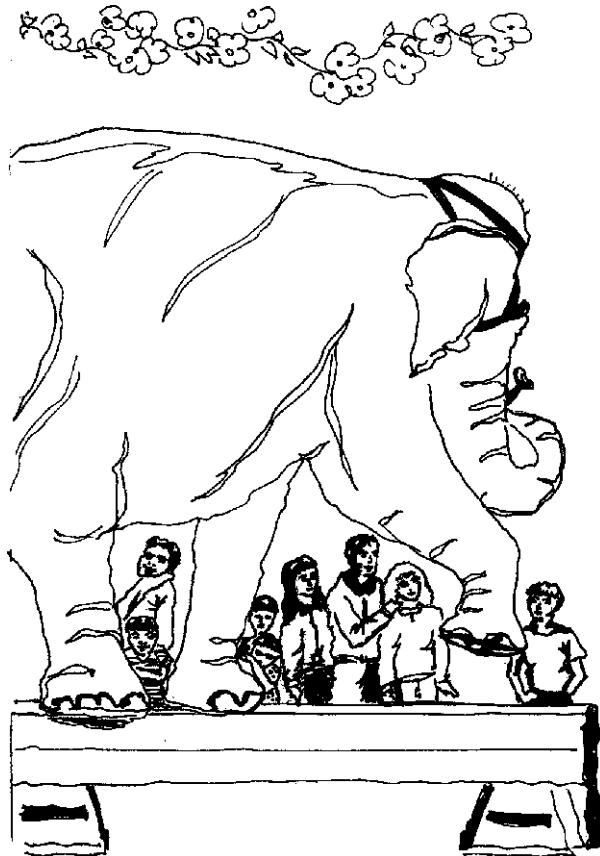
(चीकू अक्रियामा, रेडियो और टेलीवीजन समालोचक, टोक्यो)

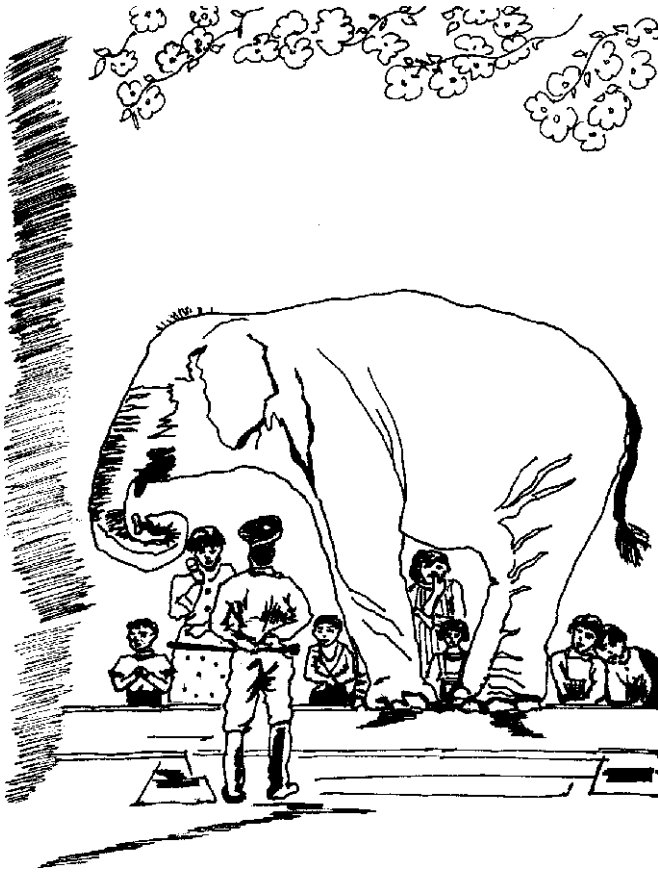
१९५१ में लिखी पुस्तक 'वफादार हाथी' के जापान में अभी तक सत्तर संस्करण छप चुके हैं।



The cherry blossoms are in full bloom at the Ueno Zoo. Their petals are falling in the soft breeze and sparkling in the sun. Beneath the cherry trees, crowds of people are pushing to enter the zoo on such a beautiful day.

जापान के यूनो चिड़ियाघर में तमाम चेरी के पेड़ थे। इस मौसम में सभी चेरी के पेड़ मनमोहक गुलाबी रंग के फूलों से लदे थे। फूलों की पंखुड़ियां धूप में चमक रही थीं। आज छुट्टी का दिन था और इस सुहाने दिन चिड़ियाघर में आने वालों की काफी भीड़ थी।





Two elephants are outside performing their tricks for a lively audience. While blowing the trumpets with their long trunks the elephants walk along large wooden logs.

अंदर दो विशालकाय हाथी, दर्शकों के मनोरंजन के लिए कुछ करतब दिखा रहे थे। यह हाथी भारी भरकम लकड़ी के तख्तों पर संतुलन बनाए खड़े थे और अपनी लंबी सूंड से भोंपू बजा रहे थे।

Not far from the cheerful square, there stands a tombstone. Not many notice this monument for the animals that have died at the Ueno Zoo. It is quiet and peaceful here, and the sun warms every corner.

One day, an employee of the zoo, while tenderly polishing the stone, told me the sad story of three elephants buried there.

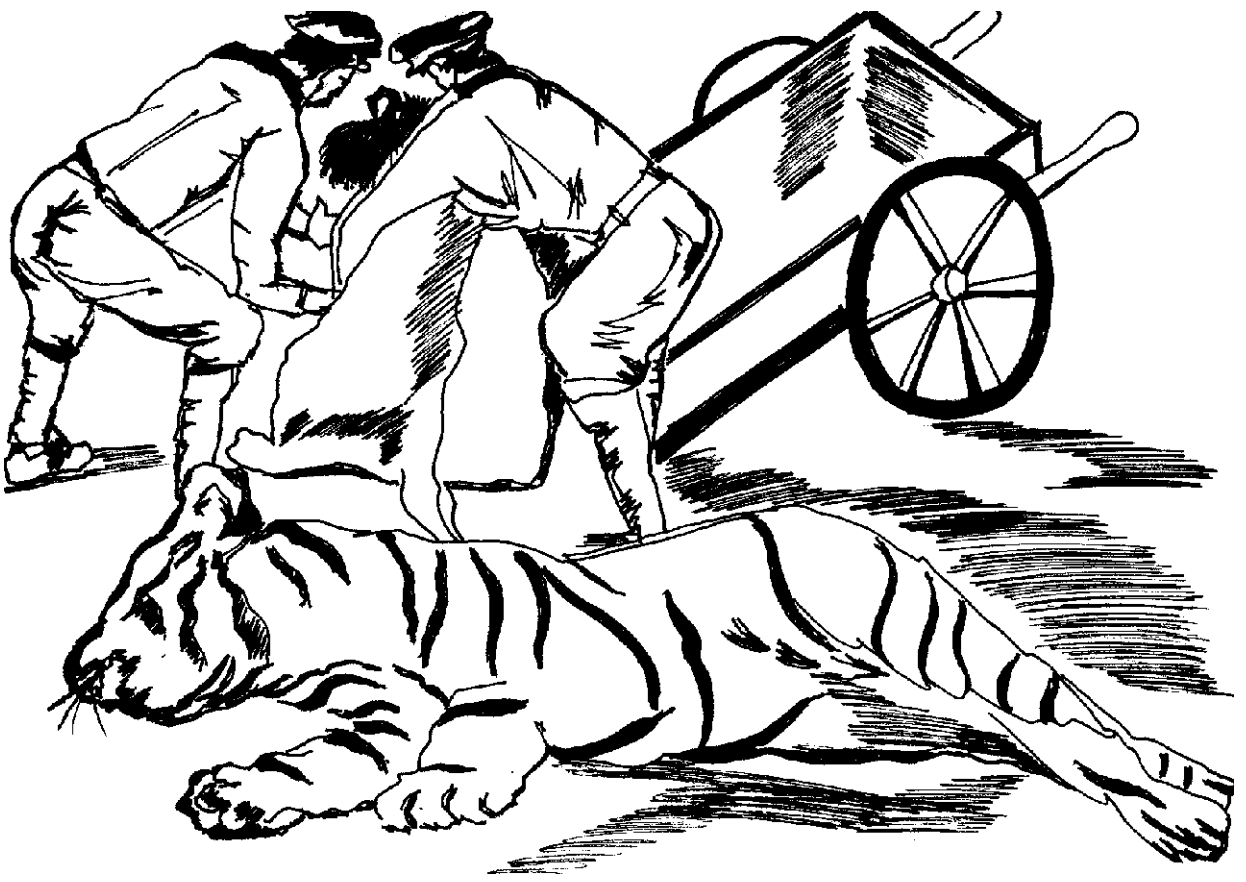
He said today there are three elephants in this zoo. But years ago, we had three different elephants here. Their names were John, Tonky and Wanly. At that time, Japan was at war. Gradually, the war had become more and more severe. Bombs were dropped on Tokyo every day and night, like falling rain.

इस जगह से थोड़ी सी दूर पर पत्थर की कब्र बनी थी। यह स्मारक उन जानवरों की याद में बनाया गया था जो कि टोक्यो के यूनो चिड़ियाघर में मारे गए थे। आम दर्शकों की निगाहें इस स्मारक पर जाती ही नहीं थीं।

एक दिन जब मैं चिड़ियाघर गया तो वहां एक आदमी इस पत्थर के स्मारक को बहुत प्यार से पॉलिश कर रहा था। उसने ही मुझे उन तीन हाथियों की कहानी सुनाई जिन्हें वहां दफनाया गया था।

आज हमारे चिड़ियाघर में दर्शकों के मनोरंजन के लिए तीन हाथी हैं। परंतु बहुत साल पहले भी यहां पर तीन हाथी थे। उनके नाम थे जॉन, टॉकी और वैनली। उस समय दूसरा महायुद्ध चल रहा था। जापान इस लड़ाई में शामिल था। जापान में रोज ही कहीं-न-कहीं बम के गोलों की बारिश जरूर होती थी।





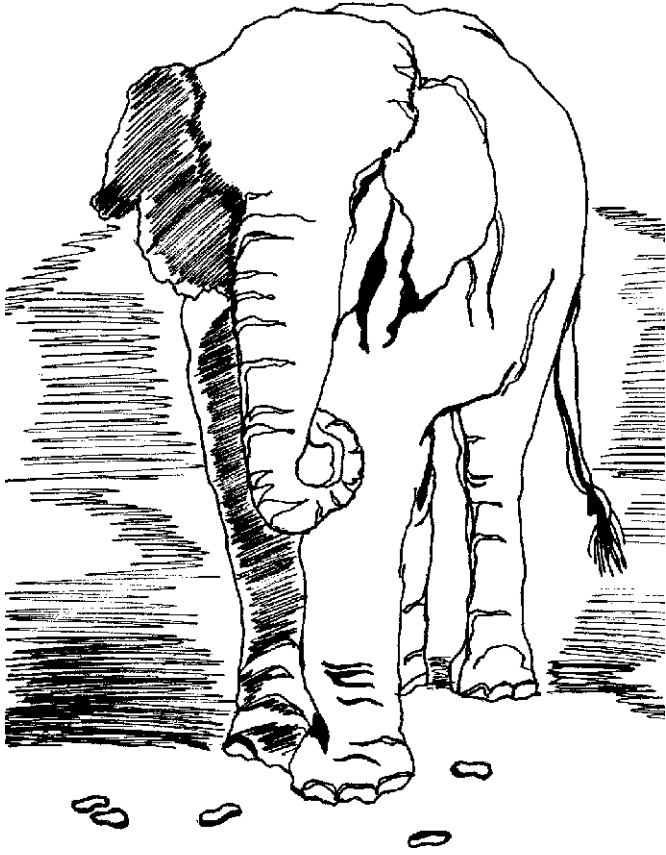
What would happen if the bombs hit the zoo? If the cages were broken and dangerous animals escaped to run wild through the city, it would be terrible! Therefore, by command of the Army, all the lions, tigers, leopards, bears and big snakes were poisoned to death.

अगर कोई बम चिड़ियाघर पर गिरता तो न जाने क्या आफत आती? तब जानवरों के पिंजड़े टूट जाते और सब खतरनाक जानवर भागकर शहर में घुस जाते। फिर तो एकदम आतंक मच जाता। इस आफत से बचने के लिए सेना ने सारे जानवरों को जहर खिलाकर मार देने का आदेश दिया। धीरे-धीरे, सभी शेरों, चीतों, तेंदुओं, भालुओं और बड़े सांपों को जहर खिला कर मौत की नींद सुला दिया गया।



By and by, the came time for the three elephants to be killed. They began with John. John loved potatoes, so the elephant keepers mixed poisoned potatoes with the good ones when it was time to feed him. John, however, was a very clever elephant. He ate the good potatoes, but each time he brought a poisoned potato to his mouth with his trunk, he threw it to the ground.

तीन बड़े हाथी बच गए। अंत में इन्हें मारने की तैयारी हुई। सबसे पहले जॉन को मारने की कोशिश की गई। जॉन को आलू बेहद पसंद थे। इसलिए चिड़ियाघर के रखवालों ने जॉन के खाने वाले आलुओं में से कुछ में जहर मिला दिया। जॉन एक बहुत ही होशियार हाथी था। उसने चुन-चुन कर अच्छे-अच्छे आलू तो खा लिए। परंतु जहरीले आलुओं को उसने, एक-एक करके अलग फेंक दिया।



"As it seems there is no other way," the zoo keepers said, "we must inject poison directly into his body."

‘अब और कोई चारा नहीं बचा,’ चिड़ियाघर के अधिकारियों ने कहा, ‘अब हमें जॉन के शरीर में सीधे इंजेक्शन के जरिए ही जहर घुसाना होगा।’



A large syringe, the kind used to give shots to horses, was prepared. But John's skin was so tough that the big needles broke off with a loud snap, one after the other. When this did not work, the keepers reluctantly decided to starve him to death. Poor John died seventeen days later.

फिर एक मोटी सी इंजेक्शन की सुई - जिसका इस्तेमाल घोड़ों को टीका लगाने के लिए किया जाता है में जहर भरा गया। परंतु, जॉन की चमड़ी इतनी मोटी थी कि सुई उसकी चमड़ी में घुसी ही नहीं और ‘चट्ट’ करके टूट गई। जब जहर की सुई भी फेल हो गई तो अंत में चिड़ियाघर के अधिकारियों ने जॉन को भूखा मारने की सोची। बेचारा जॉन, सत्रह दिनों तक भूख-प्यास से तड़पता रहा और अंत में चल बसा।



Then it was Tonky's and Wanly's turn to die. These two had always gazed at people with loving eyes. They were sweet and gentle-hearted. The zoo keepers wanted so much to keep Tonky and Wanly alive that they thought of sending them to the zoo in Sendai, far north of Tokyo.

But what if bombs fell on Sendai? What if the elephants got loose and ran wild there? What would happen then?

Tonky and Wanly, too were doomed to be killed at the Ueno zoo, just like all the other animals.

The elephant keepers stopped feeding Tonky and Wanly. As the days passed, the elephants became thinner and thinner, weaker and weaker. Whenever a keeper walked by their cage, they would stand up, tottering, as if to beg, 'Give us something to eat. Please, give us water!' Their small, loving eyes began to look like round rubber balls in their drooping, shrunken faces. Their ears seemed too large for their bodies. The one big, strong elephants had become a sad shape.

All this while, the elephants' trainer loved them as if they were his own children. He could only pace in front of the cage and moan, 'You poor, poor, pitiful elephants!' One day, Tonky and Wanly lifted their heavy bodies, staggered to their feet, and came close to their trainer. Squeezing out what little strength they had left, Tonky and Wanly made their last appeal.

उसके बाद टौंकी और वैनली को मारने की बारी आई। दोनों ने हमेशा ही लोगों को अपनी प्यार भरी आंखों से देखा था। भीमकाय शरीर होने के बावजूद वे बड़े शांत और अच्छे दिल के थे। चिड़ियाघर के अधिकारी इन हाथियों को बहुत चाहते थे। उन्होंने इन दोनों हाथियों को टोक्यो के उत्तर में स्थित सेंडाई नाम के चिड़ियाघर में भेजने की बात भी सोची।

परंतु अगर सेंडाई में भी बम बरसे तो? अगर वहां भी ये जानवर चिड़ियाघर से भागकर शहर में घुस गए तो? ऐसी स्थिति में क्या होगा?

अंत में बाकी जानवरों की तरह ही टौंकी और वैनली को भी यूनो चिड़ियाघर में ही मारने का निर्णय लिया गया।

चिड़ियाघर के अधिकारियों ने टौंकी और वैनली का खाना-पीना बंद कर दिया। जैसे-जैसे दिन बीतते गए दोनों हाथी खाने के अभाव में पतले और कमजोर होते गए। जब कभी भी कोई चिड़ियाघर का कर्मचारी उनके पिंजड़े के पास से गुजरता वे दोनों अपने पिछले दोनों पांवों पर खड़े हो जाते - जैसे कि वो कोई भीख मांग रहा हो, 'हमने क्या गुनाह किया है! कृपा करके हमें कुछ तो खाने को दो!' भूख के मारे उनका चेहरा अब सिकुड़ गया था। उनकी प्यारी आंखें अब रबड़ की छोटी गेंदों जैसी लगने लगी थीं। सिकुड़े शरीर के अनुपात में, अब उनके कान बहुत बड़े लगने लगे थे। जंगल के इन ताकतवर बादशाहों की हालत अब इतनी दयनीय हो गई थी कि उन्हें देखते नहीं बनता था।

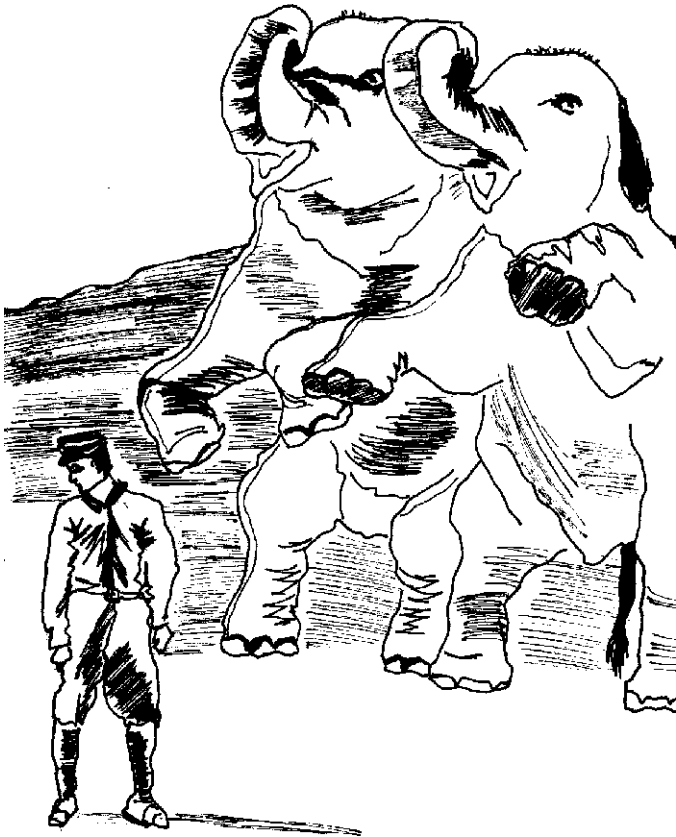
उन दोनों हाथियों का प्रशिक्षक और महावत उन्हें अपने बच्चों से भी ज्यादा प्यार करता था। वो दिन भर पिंजड़े के सामने खड़ा रहता और अपनी तकदीर को कोसता, 'कितने दुखी हो तुम मेरे दोस्तों! तुम्हारी हालत मुझ से देखी नहीं जाती!'

एक दिन टौंकी और वैनली ने अपने भारी-भरकम शरीर को पूरी ताकत लगाकर ऊपर उठाया और सूंड को हवा में लहराया।



They stood up on their hind legs and lifted their front legs up as high as they could. Then, raising their trunks high in the air, they did their banzai trick. Surely, their friend would reward them with food and water as he used to do.

पहले, जब भी वे इस तरह का कोई करतब दिखाते तो महावत उनकी ईनाम में जरूर कुछ खाने-पीने को देता था। उन्हें इस बार भी कुछ ईनाम पाने की उम्मीद थी।



The trainer could stand it no longer. 'Oh, Tonky! Oh, Wanly! he wailed, and dashed to the food shed. He carried food and pails of water to them and threw it at their feet.

महावत ने जब यह देखा तो उससे नहीं रहा गया। उसने बहुत दुख बर्दाश्त किया था। 'मेरे टौंकी! मेरी वैनली!' वो चिल्लाया और दौड़ के खाने के गोदाम में गया। जब वो लौटा तो उसके एक हाथ में खाने की टोकरी थी और दूसरे हाथ में पानी की बाल्टी। उसने यह खाना और पानी टौंकी और वैनली के सामने लाकर रख दिया।



'Here!' he said, sobbing, and clung to their thin legs. 'Eat your food! Please drink. Drink your water!'

जितना मर्जी चाहो खाओ और जम कर पानी पिओ और दोस्तों... ' कहते-कहते महावत उन हाथियों के पतले पैरों से लिपट कर रोने लगा।



All of the other keepers pretended not to see what the trainer had done. No one said a word. The director of the zoo just sat very still, biting his lip and gazing at the top of his desk. No one was supposed to give the elephants any food. No one was supposed to give them any water. But everyone was hoping and praying that if the elephants could survive only one more day, the war might be over and the elephants would be saved.

महावत ने जो कुछ भी किया उसे चिड़ियाघर के बाकी अधिकारियों ने एकदम अनदेखा कर दिया। किसी ने महावत से एक शब्द भी नहीं कहा। चिड़ियाघर के डायरेक्टर साहब भी बस अपने होंठ काटते रहे और टकटकी लगाए अपनी मेज को घूरते रहे। किसी को भी हाथियों को खाना देने की इजाजत नहीं थी। चिड़ियाघर का हरेक सदस्य बस यही आस लगाए था और यही प्रार्थना कर रहा था कि काश हाथी एक और दिन जिंदा रह जाएं। शायद अगले दिन युद्ध समाप्त हो जाए और इन प्यारे हाथियों की जान बच जाए।

At last, Tonky and Wanly could not move. They just lay on their sides, hardly able to see the white clouds floating in the sky over the zoo. However, their eyes appeared clearer and more beautiful than ever.

Seeing his beloved elephants dying this way, the elephant trainer felt as if his heart would break. He had no more courage to see them. All of the other keepers felt the same, and they too stayed away from the elephants' cage.

एक दिन ऐसा आया जब कमजोरी के कारण टौंकी और वैनली ने हिलना-डुलना भी बंद कर दिया। वे बस एक ओर करवट करके लेट गए। चिड़ियाघर के आसमान पर तैरते सफेद बादलों को वे अब अपनी आंखों से नहीं देख पा रहे थे। वैसे उनकी प्यारी आंखें, अब पहले से कहीं अधिक साफ और खूबसूरत नजर आ रही थीं।

अपने अजीज दोस्तों को इस प्रकार तिल-तिल करके मरता हुआ देखकर महावत का कलेजा फटा जा रहा था। उसे लगा कि अब वो इस दहशत भरे नजारे को और ज्यादा देर तक बर्दाश्त नहीं कर पाएगा। चिड़ियाघर की देखभाल करने वाले बाकी सभी लोगों को भी ऐसा ही लग रहा था। अब सभी ने हाथियों के पिंजड़े के पास जाना बंद कर दिया था।



Over two weeks later, Tonky and Wanly were dead. Both died leaning against the bars of their cage with their trunks stretched high in the air, still trying to do their banzai trick for the people who once fed them.

दो हफ्ते बाद टौंकी और वैनली मर गए। मरते समय दोनों के शरीर पिंजड़े के सींखचों से सटे थे और उनकी सूंडें सींखचों से बाहर हवा में लटकी थीं। वे शायद आखरी बार अपनी सूंड को ऊपर उछाल कर हवाई करतब दिखाना चाहते थे। वे उन लोगों का मनोरंजन करना चाहते थे जिन्होंने उन्हें कभी खाना खिलाया था।



'The elephants are dead! They're dead!' screamed the elephant trainer as he ran into the office. He buried his head in his arms and cried, beating the desk top with his fist.

The rest of the zoo keepers ran to the elephants' cage and stumbled in. They took hold of Tonky and Wanly's thin bodies, as if to shake them back to life. Everyone burst into tears, then stroked the elephants' legs and trunks in sorrow.

Above them, in the bright blue sky, the angry roar of enemy planes returned. Bombs began to drop on Tokyo once more. Still clinging to the elephants, the zoo keepers raised their fists to the sky and implored, 'Stop the war! Stop all wars !'

Later, when the bodies of the elephants were examined nothing was found in their washtub like stomachs - not even one drop of water.

With tears in their eyes, the zoo keeper finished his story. "These three elephants - John, Tonky and Wanly - are now resting peacefully under this monument."

He was still patting the tombstone tenderly as the cherry blossoms fell on the grave, like snowflakes.

End

'हाथी मर गए हैं! दोनों हाथी मर गए हैं!' महावत कमरे में चिल्लाते हुए दौड़ा वो अपने सिर को दोनों हाथों से थाम कर फूट-फूट कर रोने लगा और गुस्से में अपने पैरों को पटकने लगा।

चिड़ियाघर के बाकी लोग अब दौड़ कर हाथियों के पिंजड़े के अंदर गए। उन्होंने टौंकी और वैनली के कमजोर और पतले शरीर को जोर-जोर से हिलाया जैसे कि उन्हें गहरी नींद से उठाने का प्रयास कर रहे हों। फिर सभी के सभी रोने लगे और दोनों हाथियों के पैरों और सूंडों को प्यार से सहलाने लगे।

चमकीले नीले आकाश में दुश्मन के जंगी जहाज तेज से उड़ाने भरने लगे। एक बार फिर से टोक्यो पर बमों की बारिश शुरू हो गई। हाथियों से लिपटे हुए महावत और चिड़ियाघर के रखवालों ने अपनी मुट्ठियों को भींच कर आसमान की ओर उठाया और प्रार्थना की, 'युद्ध बंद करो! सभी युद्ध बंद करो!'

बाद में जब उन हाथियों के शरीर का मुआयना किया गया तो उनके विशालकाय पेट में कुछ भी नहीं मिला - उसमें पानी की एक बूंद भी नहीं थी।

जब उस चिड़ियाघर के रखवाले ने यह कहानी खत्म की तो उसकी आंखों में आंसू थे, 'वे तीन हाथी अब शांति से इस स्मारक के नीचे लेटे हैं।'

वो प्यार से उस पत्थर के स्मारक को साफ कर रहा था और ऊपर से चेरी के फूल बरस रहे थे।

अंत